आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE
- VEDA

Aryodaye Weekly No. 289 | ARYA SABHA MAURITIUS | 16 June to 30 June 2014

वेदों की व्यापकता
L'Omnipuissance des Vedas

Une citation très appropriée qui nous inspire l'étude des Vedas.

वेदाः मे परमं चक्षुः ।
Vedāha mé paramam chakshouha.

Les Vedas me pourvoient la clairvoyance voire l'aptitude de discernement.

वेदाः मे परमं बलम ।
Vedāha mé paramam balam.

Les Vedas constituent la force de ma conviction et de ma ferveur.

वेदाः मे परमं धाम ।
Vedāha mé paramam dhām.

Les Vedas me conduisent à la destination ultime de ma vie, c'est-à-dire, la félicité éternelle ou 'Moksha' (en Hindi).

वेदाः मे ब्रम्ह चोतमम ।
Vedāha mé brahma jotamam.

Les Vedas transmettent la lumière divine dans ma vie spirituelle et dans mon âme.

Shloka puisé du Mahabhārat par Dr Usha Sharma, 'Ushas'
N. Ghoorah

वेद का अनुपम सन्देश

डॉ० माधुरी रामधारी

गूहता गुह्यं तमो, वियाम विश्वमत्रिणम् ।
ज्योतिष्कर्ता यदुश्मसि ।।

इस मंत्र में भक्त ईश्वर से प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! **गुह्यं तमः** - गुहा के अन्धकार को, मेरे मन की मैल को, मेरे हृदय की गन्दगी को - **गुहता** - दूर कर दो, मिटा दो । **विश्वं अत्रिणम्** - मन के जो दुर्भाव सब खा जाते हैं, सब नष्ट कर देते हैं, उन बुरे विचारों को, बुरी भावनाओं को, **वियात** - भगा दो। **यत उश्मसि** - और जो हम चाहते हैं, **ज्योतिः** - उस दिव्य ज्योति को, ईश्वर की ज्योति को, सुख के प्रकाश को, **कर्त्त** - हमारा कर दो ।

मनु महाराज ने धर्म के दस लक्षणों में पाँचवा लक्षण **'शौच'** बताया है। **'शौच'** का अर्थ है, स्वच्छता, सफ़ाई। निर्मलता ही धर्म है । 'स्वच्छता' दो प्रकार की होती है – मन की स्वच्छता और शरीर की स्वच्छता। मनुष्य प्रतिदिन स्नान करके अपने शरीर की मैल धो देता है, गन्दगी को साफ़ कर देता है। स्नान करने के लिए 'जल' उपलब्ध है। वही जल जो प्रलय के समय धरती की सारी मलीनता बहा ले जाता है, जिससे कि नई सृष्टि हो, स्वच्छ मन वाले मानव की पुनर्सृष्टि हो। जल द्वारा शरीर और धरती की मैल तो मिट जाती है, परन्तु जल से मन की मैल को तो धोया नहीं जा सकता। फिर मन की गन्दगी को दूर करने का क्या उपाय है। क्या कोई ऐसा सरल साधन है, जिससे मन का मार्जन किया जा सके।

ऋषियों ने मन के अन्धकार को दूर करने का एक माध्यम धर्मग्रन्थ का पठन बताया है। एक पोता प्रतिदिन अपने दादा को बरामदे में बैठकर पुस्तक पढ़ते हुए देखता था। एक दिन उसने दादा से पूछा - 'दादी जी, आप रोज़ एक ही पुस्तक क्यों पढ़ते हैं ।'

दादा ने उत्तर दिया – 'बेटा, इस पुस्तक का नाम वेद है। मैं रोज़ क्यों पढ़ता हूँ, यह तुम्हें बता दूँगा, परन्तु पहले बरामदे में जो छोटा हवन-कुण्ड रखा है, उसकी राख आँगन में उलाट दो और कुण्ड में पानी भरकर लाओ।'

दादा की आज्ञा मानकर पोता छोटे हवन-कुण्ड की राख आँगन में एक कोने में उलाटकर घर के पिछवाड़े में पानी भरने चला गया। जब वह पानी भरकर घर के सामने बरामदे में लौटा तब कुण्ड से सारा पानी चू गया था। दादा ने पोते से कहा – "तुम फिर से कोशिश करो"।

पोते ने तीन बार फिर से प्रयास किया, परन्तु हर बार बरामदे तक पहुँचते-पहुँचते हवन-कुण्ड से पानी बह गया। पोते ने मुँह लटका लिया। दादा ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा – 'बेटा, इस कुण्ड को देखो। कुछ समय पहले इसमें राख सटी हुई थी। बार-बार पानी भरने से सारी राख धुल गयी। कुण्ड साफ़ हो गया। हमारे मन में भी मैल सट जाती है। जिस ग्रन्थ का मैं रोज़ अध्ययन करता हूँ, वह वेद-ग्रन्थ जल का काम करता है। मन की सारी मैल धो देता है। सुख देता है।'

वेदाध्ययन मन की शुद्धि, आत्मा की शुद्धि का प्रधान साधन है। जो वेद पढ़ नहीं सकता, वह सत्संग सुनकर या रेडियो-टेलीविजन आदि से वेदोपदेश सुनकर अपने मन का मार्जन कर सकता है। मन की सफाई सबसे बड़ी सफ़ाई है। इसी सफ़ाई की कामना करते हुए भक्त भगवान् से प्रार्थना करता है कि हे परमात्मन्, **गुह्यम् तमः** – मेरे मन की मैल को **'गुहता'** - दूर कर दो।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

वेदोत्सव का महत्व

हम समस्त आर्य परिवार प्रति वर्ष श्रावणी उपाकर्म पर्व को बड़े भक्ति-भाव से आयोजित करते हैं। पूर्व ही से घर, मन्दिर आदि की शुद्धता पर ध्यान देते हैं। यज्ञ-महायज्ञों के अनुष्ठान में प्रबन्ध करने लगते हैं । हमारे भक्तिमय आयोजन से देश भर में भक्ति का पावन वातावरण छा जाता है। इस धार्मिक पर्व के प्रभाव से हिन्दू परिवार अति प्रभावित हो उठते हैं और यज्ञ-महायज्ञों तथा धर्मोपदेशों में बड़ी श्रद्धा दिखाते हैं ।

आर्य समाज का आंदोलन-कार्य वैदिक-धर्म पर आधारित होता है। वेदों का पठन-पाठन तथा स्वाध्याय करना आर्य सदस्यों का प्रमुख उद्देश्य होता है। वेदों का प्रचार-प्रसार करना हमारा परम लक्ष्य होता है, ताकि अज्ञान, अन्धविश्वास और बुरे कर्मों से मानव समाज दूर हो सके ।

वेदों के उत्थान में आर्य समाज ने एक अद्भुत कार्य निभाया है और आज तक बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विश्व के जिन देशों में आर्य समाज स्थापित है, वहाँ सत्य, शाश्वत वेद-विद्या का पूरा प्रचार हो रहा है। वेदों के महत्व को दर्शाने में साधु-संन्यासी, आचार्य तथा पंडित-पंडितागण अति प्रयत्नशील हैं । उनके तप-त्याग और परिश्रम से धीरे-धीरे हमारे समाज से अविद्या का घोर अंधकार दूर होता जा रहा है और मानव-समाज सत्य-ज्ञान के आलोक में अग्रसर हो रहा है ।

स्वर्गीय स्वामी अखिलानन्द जी महाराज के प्रभावशाली सुझाव पर पहली वार सन् १९६६ में हमारे देश के त्रियोले गाँव में बड़े ही भव्य-रूप से श्रावणी उपाकर्म का शुभारम्भ किया गया था। इस पर्व का महत्व जानने का भाग्य हमें प्रथम बार प्राप्त हुआ था। आर्य परिवारों को साथ मिलकर यज्ञ-महायज्ञों में यज्ञमान बनने का सौभाग्य हुआ था। उस महान पर्व से उत्तर प्रान्त में इतनी भक्ति भावना जागरित हो उठी थी, कि बड़ी ही शीघ्रता पूर्वक देश के हर एक प्रान्त में श्रावणी उपाकर्म के संदर्भ में धार्मिक गतिविधियाँ होने लगीं। तब से आज तक प्रति वर्ष श्रावण मास में वेदों का अध्ययन और यज्ञ तथा यजुर्वेदीय यज्ञों का अनुष्ठान हमारे आर्य मंदिरों में निष्ठा पूर्वक किया जाने लगा है।

आर्य सभा ने तो श्रावण मास को 'वेद मास' घोषित कर दिया है। इस महीने में वेदों का गहरा अध्ययन, पठन-पाठन करने का पूरा आयोजन किया है। हमारे वेद-पाठी एवं श्रोता बड़ी श्रद्धा के साथ वैदिक विद्याओं को ग्रहण कर रहे हैं। धर्मोपदेशक अपने उपदेशों से, पंडित गण अपने शुद्ध वेद-मन्त्रोच्चारण के माध्यम से और भजनोपदेशक अपने मधुर ईश-भजनों द्वारा लोगों को ईश्वर-भक्ति की ओर प्रवृत कर रहे हैं। प्रति वर्ष हमारे वेद पाठियों की संख्या बढ़ती जा रही है और श्रद्धालु यज्ञमानों की वृद्धि दिखाई दे रही है ।

वेद ईश्वर की वाणी है, ज्ञान-विज्ञान का आगार है, सभी सत्यविद्याओं का भण्डार है। वेद को पढ़ना-पढ़ाना तथा उसे पूरी तरह समझकर अपने सखा-सम्बन्धियों और छात्र-छात्राओं को सुनाना और समझाना हमारा परम कर्तव्य है। हमारे उभरते हुए पुत्र-पुत्रियों को श्रावणी महोत्सव की जानकारी देकर उन्हें धार्मिक क्षेत्र में अग्रसर करना हमारा मुख्य कर्म है, ताकि वे वैदिक-धर्मी बनकर एक श्रेष्ठ, सुशील, सत्यवादी, सत्यकर्मी नागरिक बनकर सत्यमार्ग पर बढ़ते रहे। पाठको ! वेदों का शुद्ध-ज्ञान हमारे अन्दर के कपाट को खोलता है। अविद्या को धीरे-धीरे दूर हटाता जाता है । आज के अशान्त जीवन में भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख, शान्ति और आनन्द प्रदान करता है।

हमारा पूरा विश्वास है कि हर साल की तरह इस साल भी हमारे आर्य परिवारों की ओर से श्रावणी महोत्सव के संदर्भ में वेदों का पठन-पाठन तथा कथा-वाचन इतनी लगन के साथ आयोजित हो कि इस महान पर्व का महत्व अधिक बढ़ सके। ऐसी हमारी पूर्णाशा है कि श्रावणी उपाकर्म पर्व बड़ी सफलता पूर्वक सम्पन्न हो और हमारी कुबुद्धियों, तथा मलिन भावनाओं को शुद्ध करने में सार्थक सिद्ध हो।

श्रावणी उपाकर्म समस्त परिवारों में भक्ति-भाव उत्पन्न करे और वेद-विद्या सभी जनों के ज्ञान-चक्षु खोलती रहे। आर्य सभा की यही कामना है

अथर्ववेद – **स्तुता मया वरदा वेदमाता**
प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम
आयुः प्राणं, प्रजां पशुं कीर्त्तिं द्रविणं ब्रह्मवचसम्
महयं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्

'स्तुति करते हम वेद ज्ञान जी, जो माता है, प्रेरक, पालक पावन करती मनुज मात्र को, आयु बल, संतति, पशु कीर्ति, धन, मेधा, विद्या का दान सब कुछ देकर हमें दिया है मोक्ष मार्ग का पावन ज्ञान ।'

बालचन्द तानाकूर

श्रद्धांजलि पंडिता सावित्री गोबिन की

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के,आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मोरिशस

शनिवार ता० ७ जून २०१४ को दोपहर दो बजे आर्य भवन में स्वर्गीया पुरोहिता श्रीमती सावित्री गोबिन को आर्य सभा के तत्वावधान में आर्य पुरोहित मण्डल की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि पेश की गई। मौक़े पर पंडित देवकीनन्दन गोबिन और उनके परिवार के निकट के सदस्य उपस्थित थे जिनमें उनके बेटी-दामाद, पुत्र-पुत्र-वधुएँ, नाती-पोते तथा कई आत्मजन उपस्थित थे। आर्य सभा के मान्य प्रधान डा० रुद्रसेन निऊर, प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर, उप-प्रधान सत्यदेव प्रीतम, उप-मन्त्री डा० जयचन्द लालबिहारी और अन्य पुरोहित-पुरोहिताओं ने भाग लेकर पंडिता जी की याद को ताज़ा कर दिया। बारी बारी से प्रधान एवं उप-प्रधान और पुरोहितों के मुखिया आचार्य उमा ने पुरोहिता जी के गुणों का बखान किया। सभा प्रधान श्री बालचन्द ने जहाँ 'श्रद्धांजलि' शब्द का विवेचन किया वहीं उपप्रधान ने श्रोताओं को बताया कि सावित्री जी का जन्म बोनाकई गाँव में १९३४ में हुआ था। अगले सितम्बर मास में आप ८० साल की हो जातीं। बचपन में ही त्रियोले गाँव में चली गई जहाँ पर उसकी प्राथमिक पढ़ाई आरम्भ हुई थी और १४-१५ वर्ष की अवस्था में पंडित गोबिन से शादी हुई और दोनों की ज़िन्दगी की शुरुआत क्लेरफों वाक्वा में हुई। समय के साथ उस दंपति ने पाँच सन्तानों को जन्म दिया जिनमें तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ हुईं। पाँचों बच्चों को प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा दिलाई और उनमें से चार ने विश्व-विद्यालयीय शिक्षा पाई। अशोक और अजय उच्च शिक्षा के लिए भारत गए लेकिन सब से बड़े पुत्र प्रकाश ने अपनी प्रतिभा के बल पर यहीं पढ़कर (Accountant) लेख पाल बनें और वाक्वा-फेनिक्स नगर पालिका में नौकरी पाई। सबसे छोटी पुत्री सुलक्षणा-सम्प्रति सेबासतोपोल सरकारी माध्यमिक विद्यालय में हिन्दी की अध्यापिका है। अशोक और अजय पढ़ाई पूरी कर स्वदेश लौटे और माध्यमिक विद्यालय में अध्यापक बने। अशोक बीमार ग्रस्त होकर हमें छोड़ चले लेकिन अपनी एकमात्र पुत्री आस्था को हमें देकर गये जो आज रेडियो टेलेविजन में सेवारत है। विवाह के बाद भी हालाँकि श्रीमती चितामन से जानी जाती है पर गोबिन नाम बरक़रार रखा है। अच्छा है परिवार का नाम रोशन कर रही है।

कनिष्ट पुत्र अजय इन दिनों आर्य सभा द्वारा संचालित डी.ए.वी. कोलिज मोर्सेल्माँ सेंतान्द्रे में डिप्टी रेक्टर के रूप में सेवा रत हैं। उनका भी भविष्य उज्ज्वल है।

ऊपर लिखित वृत्तांत प्रस्तुत करने का उद्देय श्रद्धांजलि पेश करते हुए यह बताना था कि सावित्री जी के सहयोग के बिना इतनी पारिवारिक सफलता प्राप्त करना पंडित गोबिन के लिए आसान नहीं होता। सावित्री जी ने न केवल अपना परिवार आगे बढ़ाया बल्कि अपनी खुद की सफलता के साथ समाज की प्रगति की ओर ध्यान दिया।

आज सावित्री जी भौतिक शरीर से हमारे मध्य नहीं हैं पर हमारी स्मृति में वह सदा जीवित रहेगी। ऐसे ही लोगों का गुण गाया जाता जो अपने पीछे कुछ छोड़कर जाते हैं।

एक समाज का पुनर्जागरण

हर्ष के साथ सूचित हो कि कई वर्षों तक बन्द पड़ा पेची पाके, मोंताईं ब्लांश आर्य समाज संख्या नं० १६६ का पुनर्जागरण गत अप्रैल महीने में हो गया। पिछले शुक्रवार दिनांक २ मई २०१४ को सायंकाल में यज्ञ, प्रार्थना के साथ लगभग चालीस सदस्य-सदस्याओं ने बड़े भव्य रूप से सत्संग किया ।

आर्य सभा के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर जी, मोका आर्य ज़िला परिषद् के मान्यप्रधान श्री नरेन्द्र घूरा जी और कोषाध्यक्ष श्री कृष्णदत्त सिबरण जी उस सत्संग में उपस्थित थे। आर्य सभा के प्रधान जी ने आर्य समाज के महत्व पर प्रकाश डाला और सभी सदस्य-सदस्याओं से आग्रह किया कि वे बड़े सेवाभाव से अपने नवजागरित समाज के लिए समर्पित हों और समाज में शिथिलता न आने दें।

प्रधान जी के संदेश से प्रभावित होकर सभी ने यह वचन दिया कि वे अपने समाज को जागरूक रखेंगे।

साल २०१४-२०१५ के लिए निम्न प्रकार समाज का गठन :–

प्रधान	–	श्री रोशन सावन
उप-प्रधान	–	श्रीमती इन्द्रानी सावन
मन्त्री	–	श्री प्रवेश सावन
उप-मन्त्री	–	श्रीमती शुभावती सावन
कोषाध्यक्ष	–	श्री लालमन तिलोना
उप-कोषाध्यक्ष	–	श्री जयसिरी सावन
सदस्य	–	श्री युधिष्ठिर सावन
		श्री सुधीर सावन

एक दर्शक

सूचना
परीक्षा बोर्ड

अध्यापक/अध्यापिकाओ,

सेवा में सविनय सूचित हो कि इस साल **सैद्धान्तिक एवं छठी की परीक्षाएँ** निम्न तारीख को ली जाएँगी-

सिद्धान्त प्रवेश और सिद्धान्त रत्न - शनिवार ९ अगस्त २०१४ (Saturday 9 August 2014)

छठी कक्षा - शनिवार १६ अगस्त २०१४ - (Saturday 16 August 2014).

कृपया अपने छात्रों को तैयार कीजिए। नोट – (क) पहली की पुस्तक आर्य सभा में उपलब्ध है। भविष्य में दूसरी और तीसरी की पुस्तकें आ जाएँगी । (ख) आवेदन फोर्म आर्य सभा में उपलब्ध है - आर्य सभा और अपने निरक्षक से संपर्क स्थापित करें।

धन्यवाद

प्र. जीऊत, प्रधान परीक्षा बोर्ड

गूहता गुह्यं तमो, वियाम विश्वमत्रिणम् । ज्योतिष्कर्ता यदुश्मसि ।।

पृष्ठ १ का शेष भाग

शरीर छिलके के समान होता है। फल के छिलके के भीतर जो नरम भाग है, जिसे खाया जाता है, वह 'गूदा' कहलाता है। अगर छिलका साफ़ हो, पर गूदे में कीड़ा हो तो फल फेंकने योग्य हो जाता है। इसी प्रकार अगर मनुष्य का शरीर साफ़-सुथरा हो, परन्तु मन मैला हो, तो ऐसे व्यक्ति के निकट कोई पहुँचना नहीं चाहता। शरीर से भी अधिक महत्व मन का है। जो व्यक्ति मन की अपेक्षा शरीर को धोकर आकर्षक बनाने में अपना सारा ध्यान लगाता है, ऐसे व्यक्ति को फटकारते हुए महात्मा कबीर कहते हैं – 'नहाय धोय क्या भया जो मन का मैल न जाय ।' अर्थात् नहाने-धोने से क्या होगा, अगर मन का मैल न मिटे ।

मन मैला हो तो मनुष्य के भीतर अहंकार बढ़ता है। भले ही ईश्वर का भक्त हो, पर मन में अहंकार आ जाए तो करुणा की अपेक्षा मनुष्य क्रूरता का प्रमाण देता है। एक बार एक अहंकारी भक्त मंदिर में प्रवेश कर रहा था। अचानक उसके सामने एक दीन-हीन मानव आ गया। क्रोध से लाल होकर भक्त ने कहा – 'अछूत, मन्दिर के द्वार को अपवित्र करने आया है, हट जा'।

निम्न वर्ग के दीन-हीन व्यक्ति ने हाथ जोड़कर कहा - 'आप क्रोधित न हों, मैं यहाँ से चला जाऊँगा, परन्तु चारों ओर पवित्रता ही पवित्रता है, मैं अपवित्र कहाँ जाऊँ?'

दीन व्यक्ति को सुनकर भक्त ठिठक गया। वह सोचने लगा, जिस व्यक्ति को सर्वत्र पवित्रता दिखाई दे रही है, उसी को मैंने अपवित्र कह दिया। निश्चय ही अपवित्रता मेरे मन में, मेरी दृष्टि में है।

मन की मैल ही है, जिसके कारण मनुष्य दूसरों को छोटा मानता है। यह मान्यता – **'विश्वं अत्रिणम्'** - सब खा जाती है, सब नष्ट कर देती है। घर के भीतर भी यदि एक सदस्य दूसरों को छोटा मानकर उन्हें अपने इशारों पर नचाता है। तो घर का नाश होता है। दूसरे सदस्य धीरे-धीरे घर से कटने लगते हैं और जो घर हँसता-खिलता बगीचा बन सकता था, वह विरान-स्थल बन जाता है। सारा परिवार झुलस जाता है। मन के मैल ने ही कौरव, रावण और कंस के कुल का नाश किया। **'विश्वं मत्रिणम्'** – मन के विकार सब खा जाते हैं। जो मनुष्य मन को साफ़ करने की कोशिश नहीं करता, वह अपना सुख नष्ट कर देता है। इसीलिए कवि सूरदास कहते हैं – **'आपून पो आपून ही खोयो'** - अपनी शान्ति मनुष्य स्वयं खोता है।

मन में बुरे विचार जागने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और मनुष्य अपने भीतर न झाँककर दूसरों में दोष देखता है। मन का सबसे बड़ा विकार क्रोध है। रामायण में जब लक्ष्मण को सूचना मिलती है कि भरत चतुरंगिनी सेना लेकर चित्रकूट की ओर आ रहा है तब लक्ष्मण के मन में क्रोध जागता है और आवेश में आकर वह कहता है – 'भरत को राजमद हो गया है। राम को वन में अकेला जानकर वह सेना सहित राम से युद्ध करने आया है, ताकि वह अपने राज्य के काँटे को हटा दे, राम का वध करके निष्कंटक राज्य करे।'

लक्ष्मण के इस कथन पर राम कहते हैं – 'हे लक्ष्मण, भरत साधु है। क्रोध के कारण तुम साधु के साधुत्व को देख नहीं पा रहे हो और तुम्हें भरत में दोष ही दोष दिखाई दे रहे हैं।'

क्रोध, आशंका, द्वेष, ईर्ष्या सब मन की मैल हैं। जब मैल बहुत बढ़ जाती है तब साँसें अनियमित हो जाती हैं, शरीर गरम हो जाता है, धड़कनें तेज़ हो जाती हैं। धड़कनें मनुष्य को चेतावनी देती है कि हे मनुष्य, संभल जा। कोई गड़बड़ है, अपने भीतर देख और अपनी भावनाओं को व्यवस्थित कर।

जो मनुष्य धड़कनों को सुनकर संभल जाता है और मन से दुर्भाव निकाल देता है, उस मनुष्य को शान्ति मिल जाती है, उसी को ज्योति मिल जाती है । वेद मंत्र में भक्त कहता है हे प्रभु, **'ज्योतिः'** - जिस ज्योति को **'यत उश्मसि'** हम चाहते हैं **'कर्त्त'** वह ज्योति हमें दे दो ।

मन के भीतर जो जगह है, वह परमात्मा का आसन है। जगह अगर मैली हो तो परमात्मा आसन ग्रहण नहीं कर सकते। परमात्मा स्वच्छ मन में विराजमन होते हैं। मन में परमात्मा की ज्योति पाकर व्यक्ति शान्त हो जाता है। महर्षि दयानन्द का मन स्वच्छ था। इसीलिए जब विष-पान करने के बाद प्राण त्यागने का समय आया तब उन्होंने शान्त भाव से कहा - *'ईश्वर, तेरी इच्छा पूर्ण हो'*।

अमर शहीद भगतसिंह का मन भी स्वच्छ था। यही कारण है कि सूली पर चढ़ते समय उन्होंने गायत्री मंत्र का पाठ करते हुए शान्त भाव से फाँसी की रस्सी चूम ली। वेद-मंत्र में भक्त निवेदन करता है – **'गूहता गुह्यं तमो'** – हे परमात्मा, मेरे मन के अन्धकार को मन की मैल को दूर कर दो और **'ज्योतिष्कर्ता'** – मुझे वह ज्योति दे दो, प्रकाश दे दो, जिससे कि मैं शान्त हो जाऊँ, स्थिर हो जाऊँ।

ओ३म्

आर्य सभा मोरिशस

शाखा समाजों के प्रधान, मन्त्री एवं सदस्यों की सेवा में

इस वर्ष श्रावणी महोत्सव का प्रारम्भ १२ जुलाई २०१४ को प्रातः ९.०० बजे भव्य रूप से आर्य भवन से प्रारम्भ कर रहे हैं। आर्य सभा मोरिशस ने कई सालों से इसे वैदिक राष्ट्रीय पर्व घोषित किया है और हमारा प्रयत्न रहा है कि इसको राष्ट्रीय पर्व का दर्जा दिया जाय।

आर्य सभा एवं आर्य समाजों के अधिकारियों से माँग की जाती है कि इस पर्व को वैदिक राष्ट्रीय पर्व के रूप में सभी आर्य मन्दिरों में तथा परिवारों के गृह पर आयोजन करें। इन आयोजनों के उपरान्त ज़िला परिषदों के माध्यम से प्रान्तीय स्तर पर एक केन्द्रीय स्थान पर पूर्णाहुति का आयोजन भी करें। इस तरह महर्षि जी के आदेश को अर्थात्, 'वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना' को कार्यरूप दे सकेंगे।

साथ ही समाज के अधिकारियों से विनम्र निवेदन है कि आर्य मन्दिरों की अच्छी सफ़ाई कर नये ओ३म् ध्वज को फहराएँ। आर्य परिवारों को भी प्रेरित करे कि वे अपने गृह पर नये ओ३म् ध्वज को लगाएँ।

इस श्रावणी महोत्सव में स्वामी आशितोष जी परिव्राजक हमारे बीच होंगे अतः सभा से सम्पर्क करके अपने समाजों में उनका कार्यक्रम अवश्य आयोजित करें।

पूर्णाशा है कि ढाई महीनों तक श्रावणी की यज्ञाग्नि और पवित्रता अधिक से अधिक गृहों तक पहुँचे।

हरिदेव रामधनी

सभा मन्त्री

श्रद्धांजलि यज्ञ

प्रभाकर जीऊत, उप-मन्त्री आर्य सभा

गत रविवार तारीख २२ जून को स्वर्गीय वानप्रस्थी धनपत रामधनी जी की दिवंगत आत्मा के लिए रामधनी परिवार और उनके सगे संबन्धियों ने डा० गणेशी भवन बुआ दे ज़ामुरेत गाँव में श्रद्धांजलि अर्पित की ।

उप अवसर पर आर्य सभा के प्रधान श्री बालचन्द तानाकुर जी भी सपत्नी उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ २.३० बजे यज्ञ से हुआ। हॉल में काफ़ी लोग थे। भजन और प्रार्थना के बाद आर्य सभा के उप मंत्री श्री प्रभाकर जीऊत जी ने वानप्रस्थी जी के जीवन की एक झाँकी प्रस्तुत की। उन्होंने संकेत किया कि उनका जन्म १९२९ में इसी गाँव में एक गरीब परिवार में हुआ था। अल्प आयु में पिता के देहान्त हो जाने से परिवार का सारा भार उनपर हो गया। इसीलिए शिक्षा से वंचित हो गए। २६ साल की उम्र में उनका विवाह पार्वती जी से हुआ । कुछ वर्षों बाद वे ब्रीटीश फोर्स में दाखिल हुए और एजीप्त के लिए रवाना हो गए। १९५२ में वे स्वदेश लौटे और तब से सामाजिक कार्यों में लग गए। उनका देहान्त ३१ मई २०१४ को ८६ साल में हो गया।

उस अवसर पर पंडित-पंडिताओं द्वारा भजनों का रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया तथा आर्य सभा के प्रधान एवं उपमन्त्री जी का भी संदेश हुआ।

कार्य का संचालन पंडित श्याम दयबू जी द्वारा हुआ। कार्यक्रम लगभग ५.०० बजे शान्तिपाठ से हुआ।

स्वर्गीय वानप्रस्थी धनपत रामधनी जी

जन्म - १४ मार्च १९२९, मृत्यु - ३१ मई २०१४

श्री धनपत जी का जन्म १४ मार्च १९२९ को एक अत्यन्त गरीब परिवार में हुआ था। उनकी माता का नाम कौशल्या और पिता का नाम दीनदयाल था। वानप्रस्थी जी के पिता रोगी थे। उनकी दस संतानें थीं। निर्धनता के कारण वे स्कूल नहीं जा पाए। दस साल की उम्र में कठोर मज़दूरी करनी पड़ी। दैनिक वेतन के रूप में २० सेंट में काम करना पड़ता था। उनका बालकपन एकदम दुखी था। रोटी-कपड़े की हमेशा कमी रही। शिक्षा का अभाव सदा रहा। इस दयनीय स्थिति में उन्हें घर का सारा भार ढोना पड़ा। माता-पिता, छोटे भाइयों और बहनों की ज़िम्मेदारी लेनी पड़ी। उनके लिए कठिन परीक्षा का समय था।

धनपत जी जब १४-१५ साल के हुए तब उन्हें पछतावा होने लगा कि पढ़ने-लिखने का अवसर नहीं मिला। दिन-प्रतिदिन यह चिन्ता बढ़ती गई। सबसे बड़ी चिन्ता यह रही कि पिताश्री का देहान्त हो गया। भार कम होने के बजाय और बढ़ गया।

सन् १९४२ ई० में उन्होंने दूर के एक चाचा के यहाँ जाकर हिन्दी की शिक्षा प्राप्त की। जीवन में यही इच्छा रही। हिन्दी भाषा के प्रति उनकी रुचि बढ़ी। उनकी हिन्दी उतनी मँजी हुई नहीं थी। व्याकरण का अभाव था। पहली पुस्तक पढ़ने के बाद पढ़ाई बन्द हो गई। जब तक वे जीवित रहे तब तक हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करने का सिलसिला चलता रहा।

सन् १९४१ ई० में उनकी उम्र २० साल की थी। पार्वती नाम की कन्या से उन्होंने शादी की । फिर वे विदेश चले गये। उन्होंने British Force से नाता जोड़ा। सौभाग्यवश कम्पनी में एक पुजारी जी से उनकी मित्रता हुई। पुजारी जी हर रविवार को कम्पनी में यज्ञ करते थे। सात समुन्दर पार होते हुए भी सत्संग-यज्ञ के प्रति उनके मन में मधुर-मधुर भावनाएँ जागीं।

सन् १९५२ ई० में वे स्वदेश लौटे और उन्होंने समाज से नाता जोड़ा जो जीवन पर्यन्त रहा। उसी साल में वे सम्मेलन सभा के मंत्री बने। सन् १९६० ई० में भयानक कारोल तूफ़ान के कारण बैठका को भारी क्षति पहुँची। फिर उन्होंने आर्य सभा मोरिशस से सम्पर्क स्थापित किया। उस समय छोटे-छोटे समाजों का जुटाव छोटी-छोटी दुकानों में हुआ करता था।

काफ़ी प्रयासों के बाद एक टुकड़ा सरकारी ज़मीन प्राप्त हुआ। उस पर टीन लगाकर मन्दिर बनाया गया। उसमें पाठशाला खोली गयी और देखते-देखते सौ से भी अधिक बच्चे हिन्दी की पढ़ाई के लिए आने लगे। इस तरह यह यात्रा चलती रही।

सन् १९९८ ई० के जून महीने में स्वर्गीय मूलशंकर रामधनी जी और पंडित धनेश्वर डयबू के सामने वानप्रस्थी बनने का व्रत धारण किया। तदोपरान्त उन्होंने यज्ञ, व्रत, योगाभ्यास तथा समाज सेवा में अपना जीवन व्यतीत किया। उन्होंने अपनी ५० साल से अधिक सेवा कार्यों के बारे में बताया – 'सेवा के क्षेत्र में सद्भावना और सहनशीलता की अति आवश्यकता है। मान-अपमान, निन्दा, खरी-खोटी सुननी पड़ती है। समस्याओं का सामना करके सह लेने पर सफलता मिलती है। अन्यथा नहीं।'

वानप्रस्थी जी नित्यप्रति यज्ञ करते थे और कहते थे – 'यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है, आत्मकल्याण, आत्मोत्थान और जगत कल्याण का सर्वोत्तम एवं सुगम साधन है ।'

२१ जून २००३ में Bois des Amourettes Village Council ने वानप्रस्थी जी की सेवाओं के लिए सम्मानित किया था। वे हृदय रोग से पीड़ित रहे, फिर भी सेवा-क्षेत्र में ध्यान पूर्वक काम करते रहे। कई भाई-बहनों को धर्म परिवर्तन करने से रोका और उनको वैदिक धर्म की ओर लाने का सफल प्रयास किया। उनका कहना है – 'मन में श्रद्धा, भक्ति और सेवा-भाव की चाह व्यक्ति को हमेशा युवा रखती है।'

वानप्रस्थी धनपत रामधनी जी ने नियम पूर्वक अपना वानप्रस्थ जीवन बिताया। वे स्वाध्यायशील रहे। जब कभी भी भाषण देते थे, वे ज्ञानपूर्ण बातें सुनाते थे। उनकी बुद्धि की विशुद्धता उनके विचारों द्वारा प्रकट होती थी।

वानप्रस्थी जी महान् आत्मा थे। वे धर्मात्मा थे। वे प्रेम, प्यार एवं आचार के धनी व्यक्ति थे। सब बच्चे उन्हें दादा जी कहकर पुकारते थे। मधुर विचार वाले वानप्रस्थी जी बच्चों को मिठाइयाँ बाँटते-रहते थे।

आँखों के तारे थे।
सबके दुलारे थे।

उनका कहना था –

'चाहे कोई गुणगान करे,
चाहे कोई फूलों से सत्कार करे,
चाहे कोई काँटे चुभोए,
मान-अपमान जिसके लिए समान,
वह धरती का भगवान है ।
उसी का नाम रहता,
जो औरों के लिए जीता,
औरों की खुशी में,
अपनी खुशी मानता
शीघ्र-ईश्वर उसे मिलता,
जिसके हृदय प्रेम से भरा रहता है ।'

१९ अप्रैल, २०१४ को संध्याकाल में, वे एकदम बीमार हो गये। उनको अस्पताल में भर्ती की गयी जहाँ पर तीन ऑपरेशन किए गये। उनकी स्थिति में विशेष सुधार न होने के कारण उनको घर लाया गया। वे अपने घर पर अपने प्राण त्यागना चाहते थे। उन्होंने दो सप्ताह घर पर बिताये। वे एकदम रोग ग्रस्त हो गये। शुक्रवार २१ मई को बोली बन्द हो गई और शनिवार ३० मई को संध्याकाल में उन्होंने अंतिम श्वाँस छोड़ी।

'टूटा पिंजड़ा,उड़ा पंछी
चला अपना देश, यह देश बेगाना हुआ,
ब्वा दे आमुरेत आर्य समाज का
सूर्य डूब गया।'

धन रामधनी

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

ESSAY COMPETITION

SATYARTHA PRAKASH MONTH (JUNE 2014)

TO : 1) Secretaries, Arya Yuvak Sanghs/Arya Samajs/Arya Mahila Samajs
2) Rector, Secondary Colleges / Schools

To mark the Satyartha Prakash Month (2014), the Arya Sabha Mauritius is organizing an essay competition in (i) Hindi, and (ii) English as follows :

CATEGORY : ABOVE 12, NOT EXCEEDING 15 YEARS BY 14.07.2014
Word Count : AROUND 700-800
Title [English] : Satyartha Prakash guidelines on education.
Title [Hindi] : सत्यार्थप्रकाश में निर्धारित शिक्षा पद्धति

CATEGORY : ABOVE 15 YEARS, NOT EXCEEDING 20 YEARS BY 14.07.2014
Word Count : AROUND 1500-1800
Title [English]: The contribution of the Satyartha Prakash towards the (i) physical, (ii) Spiritual and (iii) social uplift of mankind
Title [Hindi] : शारीरिक,आत्मिक और सामाजिक उन्नति में सत्यार्थ प्रकाश का योगदान
Closing date : 14 July 2014

Cash prizes for each category & language :

1st prize	Rs 5,000.-
2nd prize	Rs 3,000.-
3rd prize	Rs 2,000.-

Instruction to participants :

1. Essays should be written/ word processed on A-4 paper, recto (one side only).
2. Participant should write their (a) names, (b) date of birth and (c) address on a separate sheet.
3. Envelopes should be marked **ESS-COM/SP/2014** on the top left hand corner.
4. Essays should reach The Secretary, Arya Sabha Mauritius, 1 Maharishi Dayanand Street, Port Louis by Monday **14 July 2014 at 3.30 pm** the latest.

Note : • *Arya Sabha Mauritius reserves the right not to hold any competition following this advertisement.*
• *The winners' names and essays will be published in the weekly newspaper "ARYODAYE".*
• *Special 15% discount on all Satyartha Prakash books available at Arya Sabha Mauritius.*

H. Ramdhony
Secretary

सत्यार्थ प्रकाश जयन्ती

श्रीमती भगवन्ती घूरा

वेदोद्धारक, समाज सुधारक महर्षि देव दयानन्द सरस्वती जी आर्य समाज के आन्दोलन के प्रचार-कार्य को स्थायी रूप देने के लिए साहित्य की ओर भी बढ़े थे। उस समय लोग अज्ञानता के कारण कुरीतियों और अंधविश्वास में पड़े हुए थे। मानव जीवन क्षीण हो रहा था। समाज अस्वस्थ था और देश का पतन हो रहा था। तभी स्वामी जी ने वेद ज्ञान की ज्योति से लोगों को प्रकाशित करने के वास्ते बहुमूल्य विचारों का संग्रह करके चौदह समुल्लासों में पृथक पृथक विषयों पर विचार देते हुए सत्यार्थप्रकाश ग्रंथ की रचना की। लगभग तीन मास में इस पुस्तक में स्वामी जी ने मानव जीवन का अस्तित्व, उसके धर्म और कर्तव्य, परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति उनके धर्म आदि का ज्ञान दिया। यह मानव मात्र के लिए उपयुक्त ज्ञान की एक खान है ।

यह पुस्तक सत्य की पहचान करके खुद से सही मार्ग को लेकर आगे बढ़ने की शिक्षा देती है। यह ज्ञान सिर्फ़ भारत के लोगों के लिए नहीं था पूरे विश्व के लोगों के लिए। आरम्भ में यह ग्रन्थ हिन्दी में लिखा गया था। आवश्यकता अविष्कार की जननी है। अतः इसे अनेक भाषाओं में अनूदित किया गया। आज इसी की जयंती मना रहे हैं।

हम इस लघु भारत मोरिशस के निवासी हैं फिर भी इस महान् ग्रंथ को अपनाये हुए हैं। आज हमारा जीवन उज्ज्वल है तो इसका श्रेय इसी पुस्तक को जाता है। हमारे पूर्वज भारतीय मूल के थे और सन १८९८ में भारतीय आप्रवासियों में संयोग से सूबेदार भोलानाथ तिवारी जी अपने साथ सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति लाए थे और जाते समय यहीं छोड़ गये। हमारे लिए जैसे एक चिंगारी थी जो जलते-जलते आज एक मशाल बन गयी है और लोगों को प्रकाशमान कर रही है। हाथों-हाथ यह पुस्तक के पड़ने से इसका ज्ञान बढ़ता गया और यहाँ हमारे देश में भी आर्य समाज की स्थापना हुई। आज हम सभ्यता तथा सत्य की राह पर चल पाते हैं। इस पुस्तक का ज्ञान नित्य है।

हम भारतीय वंशज भारतीय धर्म और संस्कृति को धारण किये हुए हैं और समय समय पर भारत से विद्वान-विदुषी उपदेशक एवं संन्यासी गण आते रहे और अपनी सेवा प्रदान करते रहे। स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी ने अपने प्रचार कार्य में दस साल तक हमें वैदिक धर्म का मार्ग दर्शन किया और इस महान् ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश को घर घर पहुँचाया और इसके प्रकाशन कार्य को कायम रखने के वास्ते उन्होंने एक स्थिर निधि का स्थापित की ताकि यह पुस्तक अगली पीढ़ियों को भी प्राप्त होती रहे।

पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना ज्ञान बढ़ाने का एक उत्तम माध्यम है। इस पुस्तक के अध्ययन से दिनों-दिन मानव जीवन में निखार आता है।

ऐसे ग्रंथ की जयंती मनाना सार्थक है जब कि इसका ज्ञान मानव मात्र और सब काल के लिए उपयुक्त है।

सत्यार्थप्रकाश से हुआ सत्त ज्ञान का बोध।
सत्त ज्ञान एवं अमृत वाणी से बना लेखन सुडौल।
कुरीतियों और अंधविश्वास से कोसों दूर हुए लोग।
शुद्ध विचार सदाचरण से बना जीवन अनमोल।
चौदह मोतियों से सजा सत्यार्थप्रकाश
है, दयानन्द का सिरमौर ।

OBITUARY

It is with deep regret that everybody learnt the untimely demise of **Kumari Mawsamee Ramdhony** on 9th June last. She is the eldest daughter of Shri Dharamdeo and Smt. Rajwattee Ramdhony of Trois Boutiques, Union Vale, brother and sister-in-law respectively of Shri Harrydeo Ramdhony Arya Ratna, the General Secretary of Arya Sabha Mauritius and a respected figure amidst the intellectual social environment particularly the Arya Samajists.

Young, dynamic and sympathetic Mawsamee with a joyful personality left for heavenly abode in the very prime of her youth. The death toll came at a time when everybody is involved in the preparations of Satyarth Prakash Month. This sad news is a hard blow to the near and dear ones and equally an irreparable loss to the whole community.

Born on 13th day of December in the year 1976 in a Hindu family of Vedic background she has been brought up in that environment with much love, affection and care. After her primary and secondary education she successfully completed her Higher School Certificate. Furthermore, she passed the Hindi Examinations up to the level of Uttama. She worked for some time as Hindi teacher at Willoughby College, Mahebourg before joining the Civil Service as General Purpose Teacher in the Ministry of Education. She has a track record of fifteen years of loyal service with a sound teaching experience through her postings in different Government Schools in the southern part of the island. Recently she followed the Teachers' Diploma Course and had to participate in the graduation ceremony to be held on the 6th of August 2014, but unfortunately her letter for graduation ceremony was received just two days after her demise. A desire which she cherished so much.

During her short span of life she was actively involved in social, cultural and literary activities. Possessing a competent quality of oratory, she is a well known figure among the youth as good debater and active member of Arya Yuvak /Yuvati Sangh. As such she has been awarded several prizes for her outstanding performance. Endowed with a high code of behaviour, she was loved and respected by everyone around her, at her workplace and her immediate surroundings. Another rare gifted quality - she adapted herself easily to any social environment. She will be remembered for her good qualities for many years to come by those who were close to her.

May her soul rest in peace and the Almighty give solace to the bereaved family!

S.P. Torul, *PDSM, Arya Bhushan,*
Manager, J. Ballgobeen Ashram

WORKSHOP ON "FAMILY VALUES"

At Camp Ithier on Saturday 17 May 2014

A workshop on "Family Values" was organised by the Aryan Women Welfare Association on Saturday 17 May 2014. There were 103 participants composed of primary, secondary and tertiary students, adults and 11 guests. The audience consisted of people of other communities and faiths besides the Hindus.

The workshop started at 10.00 a.m with the welcome address of Mrs Deoranee Boodhoo the President of Camp Ithier Arya Mahila Samaj. This was followed by an address by Mrs Elliette Charlot, the President of Camp Ithier Village Council. Mrs Charlot was greatly impressed by the delivery of the resource persons and the programme presented.

Then, Shri Prabhakar Jeewooth, Secretary of Flacq Arya Zila Parishad talked on the responsibility of parents to inculcate values in their children.

After that, Mrs Chandranee K. Bhuckory, Honorary President of Aryan Women Welfare Association, gave her address on the need for workshops on Family Values. She explained the importance of such workshops nowadays as parents, with so many technological gadgets available to the youth today, have been neglecting their responsibilities towards their children. She added that parents have to be reminded that they should spend quality time with their children and inculcate values in them so that the latter can live in peace and harmony.

The main item of the workshop, was presented by Mrs Rutnabhooshita Puchooa, the President of the Aryan Women Welfare Association, she first enumerated the different types of families and the meaning of 'Values' and "Family Values'. She also discussed on values that are essential for peace and harmony not only in the family but for the society at large as well.

The programme included a sketch on 'Family Values' presented by Mrs Seeta .S.Ramyead and her group. The sketch portrayed excessive love of grandparents for their grand-children, mother's care for the child, the responsibilities that must be taken up by parents and grand-parents and the need for self-control in teenagers so that they might not fall prey to abuse by unscrupulous persons.

Then followed on a talk on "Parental Skills "by Mrs Yallini Rughoo Yallapah, Vice-President of Plaine Wilhems Arya Zila Parishad. She spoke about the various types of parents (authoritative democratic). She mentioned the merits and demerits of each kind of parents.

Dr. Damyantee Beharee, Rector of Prof. Basdeo Bissoondoyal College of Central Flacq, also member of Aryan Women Welfare Association, gave a talk on 'Healthy Life Style'. She explained the importance of simple, healthy life with appropriate nutrition, physical exercise, meditation and good thoughts. Then, Mrs Dhanwantee Ramchurn delivered her message. She talked about essential value in the family such as solidarity and harmony among brothers and sisters. In the end Mr Mungur, President of Camp Ithier Arya Samaj, gave the vote of thanks. On the whole, the workshop was highly appreciated. Several requests for similar programmes were received.

Mrs R.S. Puchooa
President, AWWA

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St,
Port Louis, Tel: 212-2730,
208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी.,ओ.एस.के,आर्य रत्न
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के.,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी,*पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर,*पी.एम.एस.एम,*
आर्य रत्न
(३) श्री नरेन्द्र घूरा,*पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

In the wake of Satyarth Prakash Jayantee

Satyarth Prakash : An Infinite Boundless Ocean of Knowledge

Sookraj Bissessur

I read the book Satyarth Prakash-early in my life. I have been reading it on and often even to-day. Each time I read, I find something new in it to chew, meditate upon, I find something to digest, to make it a part of my life. The works of Voltaire and Rousseau preceded the French Revolution, and those of Marx and Angels, the Bolshesick revolution. If I say that the works of the great Swami Dayanand laid the very foundation for the Indian Renaissance Movement, it will be no exaggeration at all.

Swami Anand Bodh Saraswathi
(Ramgopal Shalwale)

"Before the multiplicity of religions, there was only one religion for the whole of humanity. All had faith in one only. They sympathized with one another in pain and pleasure. There was happiness in the whole world. Now the multiplicity of religions has led human beings too much happiness and great discord. It is the duty of wise men to find means to end it. May God show us the light."

Satyarth Prakash-Chapter X

As a reformer of human life and society in all its aspects, social, cultural and spiritual, Maharshi Dayanand Saraswati stands unique and unparallelled in history. Besides, being the greatest social preceptor of the Vedas of modern times, he was also a prominent prolific pen fighter and writer. He has written dozens of books, amongst which the Satyarth Prakash/ "Light of Truth" is his masterpiece. Critics and hyper critics proclaim it as his "Magnum Opus" and qualify it as the huge encyclopedia of Vedic religion and universal human values.

Members of the Arya Samaj follow the guidance of Maharshi Dayanand Saraswati and uphold the Vedas as holy scriptures highly imbued with universal values. We do strongly and firmly believe in the law of Karma, thus gifted with the beautiful island of Mauritius, the star and Key of the Indian Ocean as our Motherland.

0ur forefathers were brought from India under dire circumstances and were cut off from their mainland; they were lured to obtain gold just by overturning stones on the land of Mauritius! They were treated as creatures and only numbers as identity. They formed part of the rejected lot of the Mauritian society known as mere "coolies"/ Indian immigrants, indentured labourers. They had to bow down to their "Colos" masters for their daily bread after toiling throughout the stony bushes covering the island. They had no respite from sunrise to sunset. The Satyarth Prakash brought to Mauritius at the end of the 4th century by one sepoy known as Bholanath Tiwari, who virtually augured the path to enlightenment of the Asian community in Mauritius.

Mauritius has immensely benefitted from the precious teachings of the Satyarth Prakash. The Arya Samaj encouraged people to stand for their rights, and was eventually proved to be a key player in the immense and powerful struggle for independence. The Satyarth Prakash strongly advocates that the very teachings of the Vedas are universal and pertain to spirituality. In fact the Vedic teachings are not limited to the rituals of religion. There are no stories, biographies, history and prophecy in the Vedic hymns. Sectarianism and other man-made division(s) are Anti-Vedic. The Vedas are divine, spiritual and material knowledge conveyed to us through great seers at the creation of human species! To-day's world is full of Swami's- calling themselves as "Bhagwans", and who strive to assert themselves as - **GOD or AVATARS**! Maharshi Dayanand Sarasvati never proclaimed himself as a new messiah or pontiff, nor created any new religion. He was indeed a great soul who had come to save humanity from the shackles of conventions, superstitions and false beliefs.

Concluding Remarks:-

Ultimately, Swami ji made an attempt to convene a conference of religious heads with a view to evolving a system of beliefs entirely based on Truth and desired to remodel the world, so as to make it a better place to live in free from all rifts, conflicts and confrontation, religious and otherwise. Swami ji, in the Satyarth Prakash, also spelt out- how Vedic Dharma is the sole spiritual nucleus that satisfies the pre-eminent needs of the hour.

Swami Dayanand's major, immortal and spiritual realization of "Satyarth Prakash" has been the very source through which we have been able to spread, promote, propagate and promulgate the Vedic ideology in all parts of the world, including Mauritius. And the journeys have been so far quite successful and are still growing strong.

In this broad context, it is also proper to mention that the Arya brothers and sisters who have strongly and boldly adopted the good initiatives and principles of Arya Samaj have also provided a huge source of inspiration to others, and this monumental work will eventually weave the entire world into a huge and virtual entity. Thus it should be whole-heartedly emphasized that for resounding success in life, and to forge ahead on the very path of truth, truth worship is absolutely and extremely imperative.

Thus in short, it virtually goes without saying that Maharishi Dayanand's concepts, ideas regarding truth have been immensely and substantially helpful in forging and shaping our life's destiny and some have also considerably helped us in maintaining our moral, mental force and fortitude in this world of suffering, toil, tension, pretention and sensation.

In the very wake of the aforementioned concrete facts, without the least shadow of doubt, the Satyarth Prakash / the Light of Truth is always a precious book of undying UNIVERSAL VALUES.

Bois des Amourettes Arya Samaj
Gunessee Bhawan, Branch No. 141
Shravani 2014
In loving memory of Swargiya Vanprasthi Dhunputh Ramdonee

July

Date	Yajman	Venue	Purohit/Purohita	Time
Sun 6	Shuruwat	BDA	All	4.00
Mon 7	Vivek Paraduth	BDA	Pratima	4.00
Tues 8	Raj Kumar Harack	A.J	Rijaw	4.00
Wed 9	Usha Choolun	A.J	Rijaw	4.00
Thurs 10	Babita Choolun	A.J	Rijaw	4.00
Fri 11	Dewa Somalia	A.J.	Rijaw	4.00
Sat 12	Shaddoo Somalia	A.J	Rijaw	4.00
Sun13	Akhilesh Ramdonee	B.D.A	Daiboo	10.00
Sun 13	Raj Ramdonee	B.D.A	Pratima	3.00
Mon 14	Ganesh Ramdonee	V.G.	Rijaw	4.00
Tues 15	Deepak Gungadin	Pro	Indira	4.00
Wed 16	Forty Ramlakhan	Pro	Sati	4.00
Thurs17	Asha Madhu	Pro	Pratima	4.00
Fri 18	Rajiv Mohun	Pro	Sona	4.00
Sat 19	Ravin Mewa	Pro	Pradeep	4.00
Sun 20	Guruduth Ramdonee	B.D.A	Rijaw	8.00
Sun 20	Jayshankar Ramdonee	B.D.A	Sona	3.00
Sun 20	Avinash Padaruth	B.D.A	Rijaw	10.00
Mon 21	Ajay Chataroo	B.D.A	Sona	4.00
Tues 22	Mohun Preetam	G.P	Sona	4.00
Wed 23	Shastri Ramdonee	B.D.A	Pratima	4.00

to be continued .....